सत्य (1897)

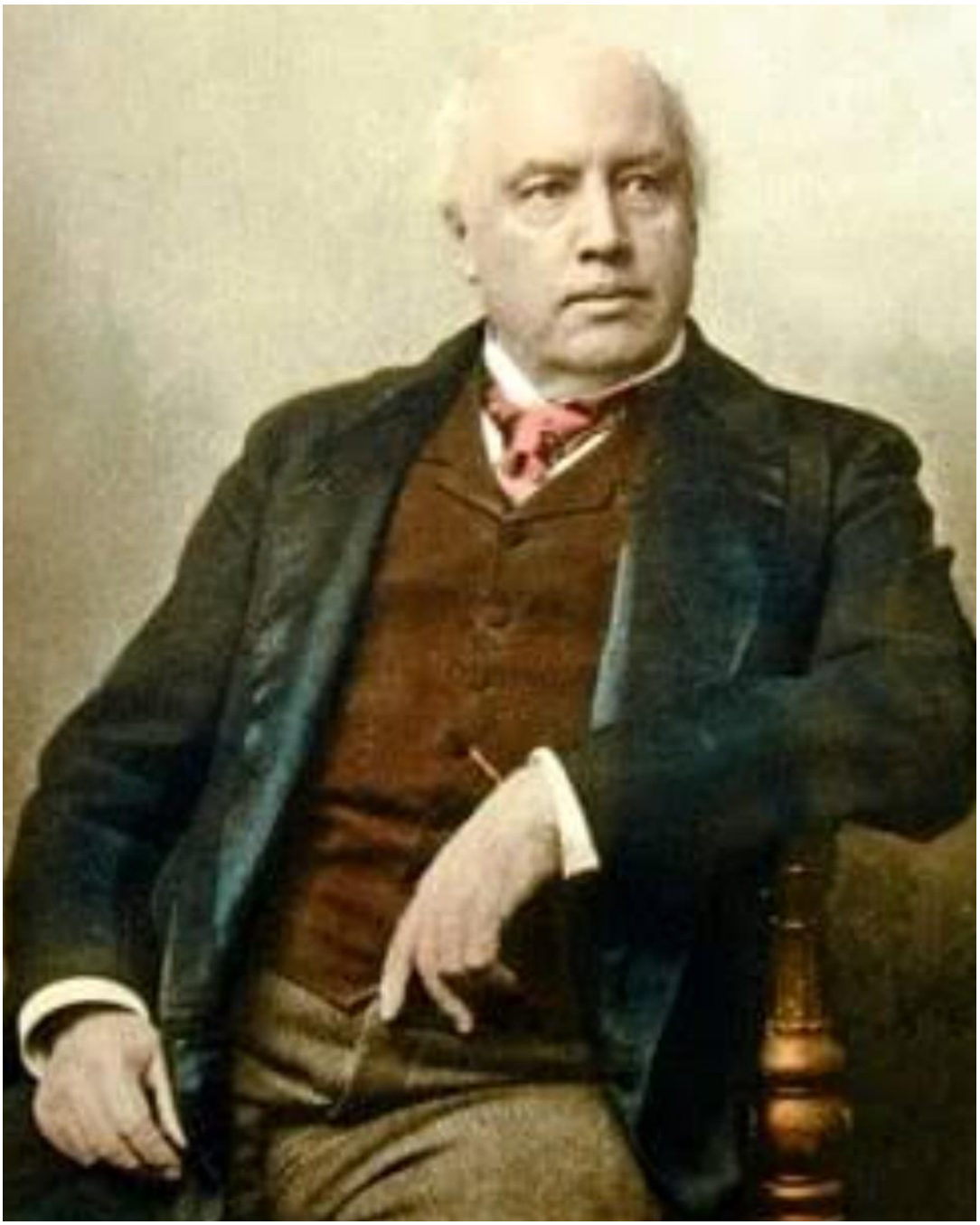

रॉबर्ट ग्रीन इंगरसॉल (1833-1899)

हिन्दी अनुवाद : मनोज मलिक

पीडीएफ संस्करण : नवंबर 2023

प्रकाशक : चंडीगढ़ ह्यूमनिस्ट एसोसिएशन

Email : chandigarhhumanists@gmail.com

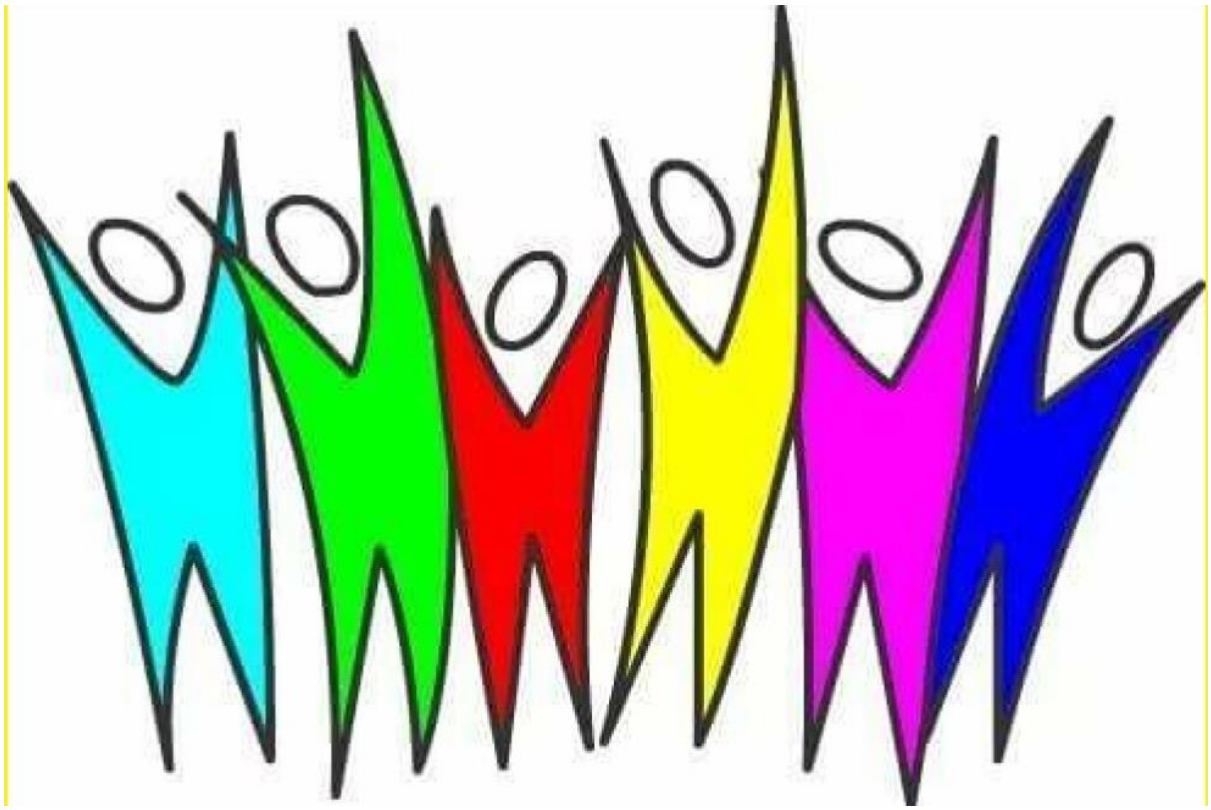

भूमिका

रॉबर्ट ग्रीन इंगरसॉल अमेरिका के महान चिंतक, वकील, लेखक और कुशल वक्ता थे। उनका जन्म 11 अगस्त 1833 को ड्रेसडेन, न्यूयॉर्क में हुआ। वे अपने प्रभावशाली भाषणों, सरल किन्तु स्पष्ट भाषा के कारण काफी लोकप्रिय हुए। इनके संबोधनों में प्रायः बाइबल, चर्च और इसके पादरी मुख्य रूप से निशाने पर रहते थे। फिर भी हमें इंगरसॉल की आलोचना को ईसाईयत तक सीमित न रखते हुए सभी धर्मों के संदर्भ में देखना चाहिए।

उन्होंने अमेरिकी गृह-युद्ध में सक्रिय भूमिका निभाई और उन्हें कर्नल की उपाधि मिली। वे इलिनॉय स्टेट के अटॉर्नी जनरल रहे। अपने निरीश्वरवादी / संशयवादी विचारों के कारण अटॉर्नी जनरल से आगे नहीं बढ़ पाए। एक बार रिपब्लिकन पार्टी के लोगों ने उन्हें अपने निरीश्वरवादी विचार छुपाने की शर्त पर, गवर्नर पद के लिए खड़े होने का आग्रह किया, लेकिन उन्होंने इन्कार कर दिया। वे सदैव दास-प्रथा, बहुपत्नी-प्रथा, रंग-भेद, अंधविश्वास के विरोधी रहे और स्त्री-अधिकारों, सेकुलरिज्म, समानता, लोकतंत्र, स्वतंत्र-अभिव्यक्ति, वैज्ञानिक सोच आदि प्रगतिशील विचारों के दृढ़ पक्षधर बने रहे। अपनी सख्त टिप्पणियों के कारण वे चर्च के पदाधिकारियों की आँख की किरकिरी बने रहे। 1880 में एक पादरी हेनरी बीचर ने इन्हें “दि ग्रेट अगनोस्टिक” कहकर पुकारा, तभी से यह उनका उपनाम-सा बन गया। इंग्लिश कवि वाल्ट व्हिटमैन उनके अच्छे मित्र थे।

उनकी पुस्तकों में The gods and other Lectures (1876), Some mistakes of Moses (1879), Voltaire : A lecture (1895), Why I am an Agnostic (1896) प्रमुख हैं। वे सच्चे अर्थों में एक मानववादी थे। उनकी मृत्यु 21 जुलाई 1899 को हुई।

रॉबर्ट ग्रीन इंगरसॉल के क्रांतिकारी विचारों से हिन्दी-भाषियों को लाभान्वित करने के उद्देश्य से इसका हिन्दी अनुवाद प्रस्तुत किया जा रहा है। इंगरसॉल के विचार पढ़कर व्यक्ति अज्ञान-निद्रा से जागकर विज्ञान की ओर उन्मुख होता है, प्रगति की ओर, सत्य की ओर, मानवता की ओर अग्रसर होता है। आशा है कि इससे हिन्दी-पट्टी, जिसे जातिवादी, अंधविश्वास-भरी पिछड़ी सोच के कारण “कॉउ बेल्ट” भी कहा जाता है, में जागृति लाने में कुछ सहायता अवश्य मिलेगी।

जय इन्सान, जय विज्ञान।

--- मनोज मलिक
2291, सैक्टर 23 सी, चंडीगढ़ 160023
मो. 9463432405

1

असंख्य वर्षों में अपनी इच्छाओं की पूर्ति तथा अपनी लालसाओं को संतुष्ट करने के अनंत प्रयासों द्वारा मनुष्य ने धीरे-धीरे अपने दिमाग को विकसित किया है, अपने अगले दो पाँवों को हाथों का रूप दिया है और वह अपने अंधकारमय दिमाग में तर्क की कुछ किरणों को स्थान दे पाया है। उसके रास्ते में अज्ञान बाधक हुआ, भय बाधक हुआ, गलतियाँ बाधक हुईं। तो भी वह आगे बढ़ा, किंतु उसी हद तक, जिस हद तक वह 'सत्य' को - परम तथ्यों को पा सका। असंख्य वर्षों तक उसने टटोला है, वह रेंगकर चला है, उसने संघर्ष किया है, वह ऊपर उठा है और उसने प्रकाश की ओर बढ़ने के लिए ठोकरें खाई हैं। उसका मार्ग अवरुद्ध हुआ है, उसने ज्योतिषियों से, अवतारों से, पोपों से, पुरोहितों से, धोखा खाया है। उसके साथ उसके संतों ने विश्वासघात किया है, उसे अवतारों ने पथभ्रष्ट किया है, उसे शैतानों और भूत-प्रेतों ने डराया है। उसे राजाओं और महाराजाओं ने गुलाम बनाया है, उसे वेदियों और सिंहासन ने लूटा है।

शिक्षा के नाम पर उसका दिमाग गलतियों से, चमत्कारों से, झूठों से, असंभव घटनाओं से, बेहूदा और बुरी बातों से भर दिया गया है। धर्म के नाम पर उसे नम्रता के साथ अभिमान, प्रेम के साथ घृणा तथा क्षमा के साथ-साथ बदला लेने की शिक्षा दी गई है।

लेकिन संसार बदल रहा है। हम इन असभ्य धर्मग्रंथों और उनके पाशविक संप्रदायों (creeds) से तंग आ गए हैं।

जीवन की गलतियों और अंधकार के बीच प्रकाशमान सत्य को देखने से बढ़कर अधिक महत्वपूर्ण कुछ भी नहीं है।

सत्य संसार का मानसिक धन है।

सत्य की खोज से श्रेष्ठतर कोई धंधा नहीं।

सत्य उन्नति के चमकते हुए गुंबद का आधार है, ढाँचा है। सत्य प्रसन्नता का जननी है।

सत्य सभ्य बनाता है, श्रेष्ठ बनाता है, पवित्र बनाता है। सबसे ऊँची महत्वाकांक्षा जो किसी की हो सकती है, वह सत्य ज्ञान की है।

सत्य आदमी को परोपकार करने का अधिक से अधिक सामर्थ्य देता है। सत्य तलवार भी है, ढाल भी है। यह अंत:करण का पवित्र प्रकाश है। जो आदमी किसी सत्य का पता लगाता है, वह अंधकार में प्रकाश फैलाता है।

सत्य का पता कैसे लगाया जाए?

सत्य अन्वेषण करने से, प्रयोग करने से, तर्क करने से मिलता है।
प्रत्येक व्यक्ति को उसकी इच्छा, उसकी योग्यता के अनुसार खोज करने की स्वतंत्रता होनी चाहिए। संसार का संपूर्ण साहित्य उसके सामने खुला हुआ होना चाहिए; कुछ भी निषिद्ध, मना या छिपा नहीं

होना चाहिए। कोई भी विषय इतना 'पवित्र' नहीं मानना चाहिए कि उसे समझने का प्रयास न किया जाय। प्रत्येक व्यक्ति को अपने निष्कर्षों पर पहुँचने और उन्हें ईमानदारी के साथ व्यक्त करने की स्वतंत्रता होनी चाहिए।

जो किसी भी खोजी को इस लोक या परलोक में सजा का डर दिखाता है, वह मानव-जाति का शत्रु है। और वह जो किसी खोजी को "सच्चिदानंद" में लीन हो जाने की रिश्वत देता है, वह अपने मानव-बंधुओं से गद्दारी करता है।
बिना सच्ची मुक्ति के सच्ची खोज हो ही नहीं सकती – देवताओं और मनुष्यों के डर से मुक्ति।

इसलिए सभी खोज, सभी प्रयोग, तर्क के प्रकाश में होने चाहिएँ।

प्रत्येक व्यक्ति को अपने प्रति ईमानदार होना चाहिए, अपने भीतरी प्रकाश के प्रति। हर आदमी को अपने ही मस्तिष्क की प्रयोगशाला में और केवल अपने लिए संसार भर के सिद्धांतों – इन तथाकथित तथ्यों का परीक्षण करना चाहिए। उसके तर्कों के अनुकूल सत्य ही उसका एकमात्र मार्गदर्शक और स्वामी होना चाहिए।
इस प्रकार जो भी 'सत्य' लगे, उससे प्रेम करना मानसिक गुण है – बुद्धि की पवित्रता है। यही सच्चा मनुष्यत्व है। यही स्वतंत्रता है।

धार्मिक संस्थाओं, महंतों, दलों, राजाओं और देवताओं की आज्ञा से अपनी बुद्धि की अवहेलना करना गुलाम होना है, दास बनना है।

यह केवल ठीक ही नहीं है किंतु यह तो हर आदमी का कर्तव्य है कि वह सोचे, अपने लिए स्वयं खोज करे; और यदि कोई आदमी डराकर या बल-प्रयोग करके उसके मार्ग का बाधक बनता है तो वह आदमी अपने मानव-बंधुओं को पतनोन्मुख बनाने और दास बनाने के लिए सभी कुछ कर रहा है।

प्रत्येक मनुष्य को मानसिक रूप से ईमानदार होना चाहिए।

आदमी को चाहिए कि वह अपनी भीतरी सच्चाई को मूल्यवान रत्न की तरह सुरक्षित रक्खे।

उसके सामने जो भी प्रश्न आएँ, उसे बिना पक्षपात के – राग-द्वेष से रहित होकर बिना इच्छा या भय के वशीभूत हुए – उन पर विचार करना चाहिए। उसका लक्ष्य और एकमात्र लक्ष्य, सत्य की प्राप्ति होना चाहिए। वह जानता है कि यदि वह बुद्धि की सुने तो उसे सत्य से कभी कोई खतरा नहीं है, असत्य से है। उसे सबूतों को, तर्कों को ईमानदारी की तराजू पर रखकर तौलना चाहिए – ऐसी तराजू पर जो राग-द्वेष से प्रभावित न हो। उसे किसी शब्द-प्रमाण की, किसी बड़े नाम की, परंपरा की अथवा सिद्धांत की परवाह नहीं करनी चाहिए। उसे सत्ता की, नामों की, परंपराओं की या पंथों की परवाह नहीं करनी चाहिए जिसे उसकी बुद्धि सत्य न मानती हो।

उसे अपने संसार का स्वयं ही महाराजा होना चाहिए और उसकी अपनी आत्मा के सिर पर ताज रहना चाहिए। उसके साम्राज्य में किसी प्रकार के दबाव और भय के लिए स्थान ही नहीं होना चाहिए।

उसे बौद्धिक रूप से सत्कारशील होना चाहिए।

पक्षपात, अभिमान, घृणा, जुगुप्सा – सत्य और उन्नति के शत्रु हैं।

सत्य का असली खोजी प्राचीन को 'प्राचीन' होने के कारण स्वीकार नहीं करता और नवीन को 'नवीन' होने के कारण अस्वीकार नहीं करता। वह किसी आदमी की बात केवल इसलिए स्वीकार नहीं करता कि वह मर गया है और किसी आदमी के कथन का केवल इसलिए खंडन नहीं करता कि वह जीवित है। उसके लिए किसी भी कथन का मूल्य इसी बात में है कि वह कितना तर्कानुकूल है। वह ये नहीं देखता कि यह बात किसने कही है। बात कहने वाला एक राजा भी हो सकता है, एक गुलाम भी हो सकता है – एक दार्शनिक भी या एक नौकर भी। इससे कथन की सत्यता और तर्कानुकूलता न बढ़ती है, न घटती है। कथन का मूल्य इसके कहने वाले के यश अथवा पद से सर्वदा स्वतन्त्र है।

केवल झूठ को ही यश और पद की तथा वर्दियों और बड़ी पगड़ियों की सहायता की आवश्यकता होती है।

जो बुद्धिमान हैं, जो वास्तव में ईमानदार और विचारवान हैं, वे संख्या से अथवा बहुमत से प्रभावित या शासित नहीं होते।

वे उसी को स्वीकार करते हैं जो उन्हें सत्य लगता है। उन्हें पूर्वजों की सम्मतियों की कोई परवाह नहीं होती, पंथों की कुछ परवाह नहीं होती, कथनों और सिद्धांतों की कुछ परवाह नहीं होती, यदि वे उन्हें अपनी बुद्धि के अनुकूल नहीं जँचते।

वे सभी दिशाओं में सत्य को ढूँढ़ते फिरते हैं और जहाँ कहीं भी मिलता है, उसे खुशी से स्वीकार कर लेते हैं – अपनी पहले की काल्पनिक सम्मतियों के बावजूद – पक्षपात, या घृणा के भावों के बावजूद।

ईमानदार और बुद्धिमान आदमियों का एक यही रास्ता है – उनके लिए अन्य कोई रास्ता है ही नहीं।

मानव प्रयत्न के प्रत्येक विभाग में मनुष्य सत्य की खोज में लगे हुए हैं – तथ्यों की खोज में। राजनीतिज्ञ संसार के इतिहास को पढ़ता है, सभी जातियों के आँकड़े इकट्ठा करता है ताकि उसकी अपनी जाति अतीत की गलतियों से बची रहे। भूगर्भ-वेत्ता तथ्यों की जानकारी के लिए चट्टानों में पैंठता है, पर्वतों पर चढ़ता है – विलुप्त ज्वालामुखी-पर्वतों (craters) को देखने जाता है, द्वीपों और महाद्वीपों को लाँघता है – इसलिए कि उसे संसार के इतिहास का कुछ पता लग जाए। वह सत्य चाहता है।

रसायनशास्त्री, चीजें गलाने के पात्र (crucible) और नली के साथ (retort) असंख्य प्रयोग करके पदार्थ के गुणों का पता लगाने का प्रयत्न करता है – प्रकृति ने जो कुछ छिपा रक्खा है, उसे प्रकट करने का प्रयत्न करता है।

बड़े-बड़े यंत्रवेत्ता असलियत के संसार में रहते हैं। वे प्राकृतिक साधनों द्वारा प्रकृति पर विजयी होना चाहते हैं और उसकी शक्तियों का उपयोग करना चाहते हैं। वे सत्य चाहते हैं – यथार्थ बातें।

चिकित्सक और शल्यकर्मी निरीक्षण, प्रयोग और तर्क का सहारा लेते हैं। वे मानव-शरीर से – मांसपेशियों, रक्त और रगों से – दिमाग की आश्चर्यजनक बातों से परिचित हो जाते हैं। वे सत्य के अतिरिक्त और कुछ नहीं चाहते।

और सभी विज्ञानों के विद्यार्थी ऐसा ही करते हैं। वे चारों ओर तथ्यों की तलाश में रहते हैं और यह सबसे महत्व की बात है कि उन्हें इस प्रकार जिन तथ्यों की जानकारी मिलती है, वे उन्हें संसार को दे देते हैं।

जितनी उनकी बुद्धि है उतना ही उनका साहस भी होना चाहिए। भले ही जो मर गए हैं उन्होंने कुछ भी कहा हो, भले ही जो जीवित हैं, उनका कुछ भी विश्वास हो, उन्हें बताना चाहिए कि वे क्या जानते हैं। उनमें मानसिक साहस होना चाहिए।

यदि आदमी के लिए सत्य की प्राप्ति अच्छी बात है, यदि उसके लिए अच्छा है कि वह ईमानदारी से विचार करे और उदारता का बर्ताव करे – तो दूसरों के लिए भी यह अच्छी बात है कि वे उस सत्य को जो इस प्रकार प्राप्त हुआ है, जानें।

हर आदमी में अपने विचार को ईमानदारी से प्रकट करने का साहस होना चाहिए। इससे सत्य को प्राप्त करने वाला और उसे प्रकट करने वाला जनता पर उपकार करता है।

जो ईमानदाराना विचारों को प्रकट करने में बाधा डालते हैं या बाधा डालने का प्रयत्न करते हैं, वे सभ्यता के शत्रु हैं – सत्य के शत्रु हैं। उस आदमी से बढ़कर स्वार्थी और निर्लज्ज कोई नहीं हो सकता जो अपने विचारों को तो स्वतंत्रतापूर्वक प्रकट करने का अधिकार चाहता है परंतु दूसरों को वही अधिकार देना नहीं चाहता।

ऐसा कहने से काम नहीं चलेगा कि कुछ बातें इतनी पवित्र हैं कि आदमी को उनके बारे में छानबीन करने और उनकी परीक्षा करने का अधिकार ही नहीं है।

कौन जानता है कि वे 'पवित्र' हैं? क्या कोई भी ऐसी चीज पवित्र हो सकती है जिसके बारे में हम यह नहीं जानते कि वे सत्य भी है या नहीं।

शताब्दियों तक स्वतंत्र-वाणी को परमात्मा के लिए अपमानजनक समझा गया। ईमानदारी से अपने विचार प्रकट करने से बढ़कर कोई बात अधिक "ईश-निंदा" नहीं समझी गई। युगों तक बुद्धिमानों के होंठ सिले रहे। जिन मशालों को सत्य ने जलाया, जिन्हें साहस ऊपर उठाकर ले चलता था, वे रक्त से बुझा दी गईं।

सत्य हमेशा वाणी की स्वतंत्रता का पक्षधर रहा है – उसने हमेशा चाहा है कि उसका परीक्षण हो – उसकी हमेशा इच्छा रही है कि लोग उसे जानें और समझें। स्वतंत्रता, विचार-विमर्श, ईमानदारी, परीक्षण और साहस – ये सब सत्य के मित्र और सहायक हैं। सत्य को प्रकाश और खुला क्षेत्र प्रिय है। यह इंद्रियों को – निर्णय कर सकना और बुदधिपूर्वक विचार कर सकना आदि जितनी भी मन की ऊँची और श्रेष्ठतर शक्तियाँ हैं उनको – अपील करता है। यह उत्तेजना को शांत करता है, पक्षपात को नष्ट करता है, और बुद्धि-रूपी दीपक को और भी अधिक प्रज्ज्वलित करता है।

यह आदमी को रेंगने के लिए नहीं कहता। इसे अज्ञानियों की पूजा की अपेक्षा नहीं। यह भय-त्रस्तों की प्रार्थनाएँ या स्तुतियाँ नहीं सुनना चाहता। यह प्रत्येक मनुष्य से कहता है – "अपने लिए स्वयं सोचो। देवता की तरह स्वतंत्र रहो। और अपने विचारों को ईमानदारी से प्रकट कर सकने लायक शील और साहस रक्खो।"

हमें सत्य का अनुसरण क्यों करना चाहिए? और हमें खोज क्यों करनी चाहिए? और तर्क क्यों करना चाहिए? और हममें मानसिक ईमानदारी और सत्कार (hospitable) क्यों होनी चाहिए? और हमें क्यों अपने विचारों को प्रकट करना चाहिए? इन सबका एक ही उत्तर है – मानवता के कल्याण के लिए।

मस्तिष्क का विकास अवश्य होना चाहिए। संसार को अवश्य सोचना सीखना चाहिए। वाणी अवश्य स्वतंत्र रहनी चाहिए। संसार को अवश्य सीखना चाहिए कि सहज-विश्वास (credulity) कोई गुण नहीं है, और तब तक किसी प्रश्न का फैसला नहीं होता जब तक बुद्धि संतुष्ट नहीं होती।

इस प्रकार मनुष्य प्रकृति की बहुत सी बाधाओं को जीत लेगा। वह अनेक रोगों को अच्छा कर लेगा या उनसे बचा रहेगा। वह दुख-दर्द में कमी करेगा। वह आयुष्य बढ़ाएगा, जीवन को श्रेष्ठ और हरा-भरा बनाएगा। प्रत्येक दिशा में वह अपनी शक्ति बढ़ाएगा। वह अपनी इच्छाओं की पूर्ति करेगा, रसों का स्वाद चखेगा। वह ऐसी व्यवस्था करेगा कि सभी को छत और पहनने को कपड़े मिलें, भोजन और उसे पकाने के लिए जलावन मिले, घर मिलें और उसमें प्रसन्नतापूर्वक रहना मिले।

वह अभाव और अपराध को संसार में रहने न देगा। वह भय के विषैले साँपों और मिथ्या-विश्वास के राक्षसों को मार डालेगा। वह बुद्धिमान, स्वतंत्र ईमानदार और शांत (serene) बनेगा।

आकाश का महाराजा उसके सिंहासन से उतार दिया जाएगा – नरक की आग बुझा दी जाएगी। 'पवित्र' भिखमंगे ईमानदार और उपयोगी आदमी बन जाएँगे। ढोंगी दूसरों को डराकर उनसे रस्में न उगाह सकेंगे। असत्य कथनों को 'पवित्र' न समझा जाएगा। किसी दूसरे जीवन के लिए इस जीवन का बलिदान नहीं किया जाएगा। देवी-देवताओं से प्रेम करने की बजाय मनुष्य एक-दूसरे से प्रेम करेंगे। आदमी जो उचित समझेगा वही करेगा, किंतु किसी परलोक में कुछ प्राप्ति की आशा से नहीं, परंतु इसी लोक में प्रसन्न रहने के लिए। आदमी जान जाएगा कि एकमात्र प्रकृति ही सच्चा 'इलहाम' (revelation) है। उसे खुद कोशिश करके सितारों और बादलों द्वारा कही गई कहानियों को पढ़ना सीखना चाहिए। उसे पत्थरों और पृथ्वी, समुद्र और नदी, वर्षा और आग, पौधों और उनके फूल –

जीवन के जितने विविध रूप हैं तथा संसार की और भी जितनी वस्तुएँ तथा शक्तियाँ हैं – सभी के द्वारा कही गई कहानियों को पढ़ना सीखना चाहिए।

जब वह इन कथाओं को पढ़ेगा, इन रिकार्डों को समझेगा – तब उसे पता लगेगा कि आदमी को खुद अपने ऊपर भरोसा करना चाहिए, क्योंकि सुपरनेचुरल का अस्तित्व नहीं है और आदमी ही आदमी का सहारा है।

विचार-स्वातंत्र्य के विरुद्ध – अपने आत्मसम्मान को सुरक्षित रखने के विरुद्ध, अपने भीतर की सच्चाई को एकदम साफ रखने के विरुद्ध, किसी तर्क की कल्पना नहीं की जा सकती।

2

जो कुछ मैंने कहा है वह सब सच प्रतीत होता है, लगभग स्वयं-सिद्ध। और तुम प्रश्न कर सकते हो कि कौन है जो कहता है कि गुलामी स्वतंत्रता से अच्छी है? मैं आपको बताता हूँ:-

जितने बड़े-बड़े महंत और पुरोहित हैं, जितने कट्टरपंथी धर्म हैं, जितने पुजारी हैं – वे सब कहते हैं कि उनके पास परमात्मा से प्राप्त किया हुआ 'इलहाम' है।

प्रोटेस्टेंट पंथ वाले कहते हैं कि हरेक आदमी का यह कर्तव्य है कि वह बाइबल को पढ़े, समझे और विश्वास करे कि यह 'इलहामी' पुस्तक है। किन्तु यदि वह ईमानदारी से इस परिणाम पर पहुँचता है कि बाइबल 'इलहामी' पुस्तक नहीं है और अपने दिमाग में इसी धारणा को लिए मर जाता है तो वह हमेशा के लिए दुख भोगेगा। वे कहते हैं कि: – 'पढ़ो' लेकिन साथ ही कहते हैं – "या तो विश्वास करो, या सदा के लिए विनाश को प्राप्त हो जाओ।"

"चाहे बाइबल आपको कितनी ही तर्क-विरुद्ध लगे, आपको उसे मानना ही होगा। चाहे उसमें वर्णित 'चमत्कार' कितने ही असंभव लगें, तो भी उन्हें मानना होगा। चाहे उसके नियम कितने ही निर्दयी लगें, तुम्हें स्वीकार करना होगा।"

इसे धर्म 'विचार-स्वातंत्र्य' कहता है। हम परमात्मा के भय के कारण बाइबल पढ़ते हैं। हमें नरक की आग की चमक में बैठकर पढ़ना होता है। एक ओर शैतान है जिसके हाथ में पीड़ा देने के अनेक साधन हैं, दूसरी ओर 'परमात्मा' है जो हमें अनंतकाल के लिए विनाश के गड्ढे में ढकेलने को तैयार है। और धर्म कहता है : "तुम अपना चुनाव करने में स्वतंत्र हो। परमात्मा नेक है। वह तुम्हें अपना चुनाव करने की स्वतंत्रता देता है।"

बड़े-बड़े पोप और पादरी गरीब लोगों से कहते हैं:- "तुम्हें बाइबल पढ़ने की जरूरत नहीं। तुम इसे समझ नहीं सकते। इसीलिए इसे इलहामी किताब कहा गया है। हम इसे तुम्हारे लिए पढ़ देंगे। जो हम कहें, उसे तुम्हें

मानना चाहिए। हमारे हाथ में नरक की चाबियाँ हैं। यदि हमारा खंडन करोगे तो तुम सदा के लिए परमात्मा के जेलखाने में बंदी हो जाओगे।"

यह कैथोलिक धर्म की 'स्वतंत्रता' है।

और ये जितने पादरी और पुजारी हैं, इन सबका आग्रह है कि बाइबल का दर्जा मानवी तर्क के ऊपर है। और प्रत्येक आदमी का कर्तव्य है कि वह इसे माने – चाहे वह इसे सच्चा समझे चाहे न समझे, बिना इस बात का विचार किए कि यह तर्कानुकूल तथा बुद्धिगम्य है या नहीं।

उसका कर्तव्य है कि वह अपने आत्म-मंदिर में से बुद्धि की देवी को निकाल बाहर करे और भयरूपी नाग के सामने – जो कुंडली लगाए बैठा है – सिर झुका दे।

इसे धर्म 'सदाचार' कहता है।

ऐसी अवस्था में विचार का क्या मूल्य हो सकता है? परमात्मा के शाप रूपी झोंके में दिमाग रेगिस्तान बन जाता है।

लेकिन, इतना ही नहीं है। आदमी से तर्क का आधार छुड़ा देने के लिए 'मजहब' केवल अनंत-दुख का भय ही नहीं दिखाता, किन्तु अनंत-काल तक आनंदपूर्वक रहने का पुरस्कार मिलने की भी बात कहता है।

जो विश्वास करते हैं उन्हें यह स्वर्ग के अनंत मजों की बात कहता है। यदि यह डरा नहीं सकता तो यह रिश्वत देता है। यह भय और लालच पर निर्भर है।

बुद्धिमान आदमियों का आदर-सम्मान पाने के लिए के लिए, धर्म का आधार सुनिश्चित तथ्य होने चाहियें। उसे उत्तेजना अथवा भय या लालच का नहीं, बुद्धि का सहारा लेना चाहिए। उसे कहना चाहिए कि मन की सारी शक्तियाँ और सारी इंद्रियाँ एक जगह इकट्ठी विचार करे और जो कुछ भी धर्म का कथन है उस पर बिना पक्षपात के, बिना भय के सम्पूर्ण सच्चाई के साथ विचार करें।

लेकिन चर्च कहता है – "भगवान ईसा मसीह पर विश्वास लाओ और तुम बचा लिए जाओगे।" इस पर विश्वास किये बिना मुक्ति नहीं है। मुक्ति विश्वास का पुरस्कार है।

विश्वास का आधार प्रमाण होता है, और हमेशा होना चाहिए। पुरस्कार मिलने की वादा 'प्रमाण' नहीं है। इससे कोई बौद्धिक प्रकाश नहीं मिलता। इससे कोई तथ्य सिद्ध नहीं होता, किसी शंका का समाधान नहीं होता, किसी संदेह की निवृत्ति नहीं होती।

क्या यह ईमानदारी की बात है कि किसी को विश्वासी बनाने के लिए पुरस्कार मिलने का वादा किया जाए?

यदि कोई आदमी किसी न्यायाधीश को निर्णय के लिए रिश्वत देता है तो यह एक अपराध होता है। क्यों? क्योंकि वह निर्णय को प्रभावित करता है, कि वह कानून के अनुसार, वास्तविकता के अनुसार, उचित फैसला न देकर रिश्वत के अनुसार फैसला दे।

रिश्वत कोई 'प्रमाण' नहीं है।

इसी प्रकार ईसामसीह के बारे में यह कहना कि वह विश्वासियों को पुरस्कृत करेंगे, रिश्वत देना है। जो कहता है कि वह विश्वास करता है और कहता है कि उसे पुरस्कृत होने की आशा है, वह अपने आत्मा को मलिन करता है।

उदाहरण के लिए यदि मैं कहूँ कि पृथ्वी के बेच में एक हीरा है, जो सौ मील लंबा-चौड़ा है और कि मैं अपनी इस बात में विश्वास करने वाले को दस हजार डालर दूँगा, तो क्या मेरा ऐसा वादा 'प्रमाण' समझा जाएगा?

बुद्धिमान आदमी पुरस्कार नहीं, तर्क चाहेंगे। केवल ढोंगी आदमी धन की ओर देखेंगे।

इतना होने पर भी 'नवीन टेस्टामेंट' के अनुसार ईसा ने विश्वासियों को पुरस्कृत करने की बात कही, और यह पुरस्कार ही 'प्रमाण' का स्थान लेने वाला था। जिस समय ईसा ने यह पुरस्कृत करने का वचन दिया उस समय उसने एक वीर, स्वतंत्र, सच्ची आत्मा को भुला दिया, उसकी अवहेलना की, उसे घृणा की नजर से देखा।

यह घोषणा कि मुक्ति 'विश्वासी' बनने से मिलती है मानसिक स्वातंत्र्य के साथ मेल नहीं खाती। कोई भी आदमी जो 'विश्वास' और 'प्रमाण' के संबंध पर थोड़ा भी विचार करता, ऐसी घोषणा नहीं कर सकता।

वे तमाम 'प्रवचन' जिनमें यह कहा गया है कि आदमी 'विश्वास' द्वारा अपना उद्धार कर सकता है, हानिकर सिद्ध हुए हैं। ऐसे 'प्रवचनों' से 'नैतिकता' का ह्रास होता है और सदाचार तथा कर्तव्य की सच्ची कल्पना उलट-पलट जाती है।

सच्चे आदमी से जब 'विश्वास' करने के लिए कहा जाता है तो वह 'प्रमाण' माँगता है। सच्चा आदमी जब किसी दूसरे को 'विश्वास' करने के लिए कहता है तो 'प्रमाण' देता है।

लेकिन यह इतना ही नहीं है।

अनंत-कालीन पीड़ा के डर और सार्वकालिक आनंद के वादों के बावजूद जब 'अविश्वासियों' की संख्या बढ़ी, तब चर्च ने दूसरा उपाय किया।

ईसाई मजहब के पादरियों ने अविश्वासियों से, नास्तिकों से कहा – "यद्यपि ईश्वर तुम्हें परलोक में अनंत सजा देगा – जेल में डालकर रक्खेगा, उस जेल में जिसके दरवाजे केवल लोगों को अंदर लेने के लिए खुलते हैं, तो भी जब तक तुम 'विश्वासी' नहीं बनते, तब तक हम तुम्हें यहाँ कष्ट देंगे।"

तब उन सब संप्रदाय के लोगों ने, जिनके नेता महंत, पुरोहित और पुजारी थे, अपने 'अविश्वासी' पड़ोसियों को ढूँढ़ निकाला, उन्हें जेलखानों में बेड़ियाँ पहनाकर डाल दिया, शिकंजों पर कसा, उनकी हड्डियाँ तोड़ डाली, जीभें खींच लीं, आँखें निकाल डालीं, चमड़ी उधेड़ डाली और आग में जला दिया।

यह सब केवल इसलिए किया गया क्योंकि ये जंगली ईसाई 'अनंत-पीड़न' के सिद्धांत में विश्वास करते थे। क्योंकि वे यह विश्वास करते थे कि स्वर्ग 'विश्वास' का पुरस्कार है। इस प्रकार का विश्वास करने के कारण, वे विचार और वाणी की स्वतंत्रता के शत्रु बने – उन्हें अंतरात्मा की आवाज की कोई परवाह न थे – उन्हें आत्मा की सच्चाई की कोई प्रवाह न थी – उन्हें मनुष्यता की परवाह न थी। सभी युगों में अधिकांश पुरोहित निर्दयी हुए हैं और (दूसरों के दुख-सुख की ओर से) लापरवाह। उन्होंने आदमियों पर झूठे दोषारोपण करके उन्हें पीड़ा पहुँचाई है। जब वे हार गए तब रेंगने लगे हैं और गिड़गिड़ाने लगे हैं, जब जीते हैं तब उन्होंने दूसरों को जान से मारा है। न्याय कभी उगा ही नहीं। अब वे इतने निर्दयी नहीं है। अब उनके हाथ से शक्ति जाती रही है, लेकिन अभी जो असंभव है उसे संभव बनाने का प्रयत्न करते हैं। वे 'मूर्खों के धन' से अपनी जेबें भर लेते हैं। वे गलत बातों से अपना भर लेते हैं और समझते हैं कि वे बुद्धिमान हैं। वे पौराणिक कथाओं से तथा गपोड़ों से अपनी आत्म-संतुष्टि कर लेते हैं, वे भूत-प्रेतों में विश्वास करते हैं और जो है नहीं, उससे सहायता की आशा लगाए बैठे रहते हैं।

वे एक राक्षस – एक स्वामी – को आकाश में बिठाते हैं और अपने मानव-बंधुओं को उसकी दासता सिखाते हैं। वे आदमियों को गुलामों के तरह रेंगना सिखाते हैं। उन्हें मानव के साहस से डर लगता है। वे विचार करने वालों से घृणा करते हैं। वे बदला लेने की इच्छा लिए रहते हैं।

वे काल्पनिक नरक की गर्मी से अपने हाथों को गरम रखना चाहते हैं।

मैं उन्हें बताता हूँ कि कहीं कोई नरक नहीं है। वे मुझे गालियाँ देते हैं कि मैंने उनका संतोष हर लिया। कथा है, कि होरेस ग्रीली एक दिन जब सर्दी पड़ रही थे गाँव के एक भंडार-घर में गया और अपने कोट के बटन खोल कर तापने बैठ गया।

थोड़ी देर में एक लड़के ने चूल्हे की आग को कुरेदकर कहा – "मिस्टर ग्रीली, चूल्हे में आग तो है ही नहीं।"

ग्रीली बोला, "शैतान कहीं का। यह तूने मुझे बताया? मुझे तो अच्छी खासी गर्माहट लग रही थी।"

3

देववाद का विज्ञान

देववाद (Theology) को छोड़कर शेष जितने विज्ञान हैं वे सब सत्य-घटनाओं को जानने के लिए उत्सुक रहते हैं – सत्य के लिए भूखे होते हैं। जो कोई नई बात का पता लगाता है उसकी स्तुति होती है।

लेकिन किसी धर्म की पाठशाला में यदि किसी अध्यापक को किसी ऐसी बात का पता लगे जिसका पंथ (creed) से मेल न हो, तो उसे या तो छिपाकर रखना चाहिए, या उसे अस्वीकार करना चाहिए, नहीं तो उसे अपने पद से हाथ धोना पड़ेगा। मानसिक सत्य-प्रियता एक अपराध है, कायरता और ढोंग महान गुण है।

जिस बात का पंथ से मेल नहीं बैठता उसे यथार्थ होने पर भी 'असत्य' कहकर दुतकारा कहा जाता है, और जो कोई उस बात को कहता है उसे 'ईशनिंदक' कहा जाता है। हर अध्यापक को 'मिथ्या' की वायु में साँस लेना पड़ता है। 'देवशास्त्र' ही एकमात्र बेईमान शास्त्र है – ऐसा शास्त्र जो 'विश्वास' पर निर्भर करता है, अंध-श्रद्धा पर निर्भर करता है – यही एकमात्र ऐसा 'शास्त्र' है जो विचार से घृणा करता है और जो तर्क की निंदा करता है।

कैथोलिक धर्म के सब बड़े-बड़े 'शास्त्रियों' ने तर्क की निंदा की है। उन्होंने उसे मानवता के शत्रु द्वारा फैलाया गया 'प्रकाश' कहा है। उन्होंने कहा है कि यह वह सड़क है जो विनाश की ओर जाती है। सब प्रोटेस्टेंट धर्म-शास्त्री – लूथर से लेकर अपने इस युग के कट्टरवादियों तक – तर्क के शत्रु हुए हैं। सभी समयों के सभी कट्टरपंथियों की विज्ञान से शत्रुता रही है। उन्होंने नक्षत्र-विज्ञानियों की ऐसी निंदा की है, मानो वे कोई अपराधी हों और भूगर्भ-वेत्ता हत्यारे हों। उन्होंने चिकित्सकों को 'परमात्मा' का शत्रु समझ है, क्योंकि वे विधाता के लिखे को बदलने का प्रयत्न करते हैं। जीव-विज्ञानी, मानव-विज्ञानी, पुरातत्व-वेत्ता, पुराने अभिलेखों के पाठक, विध्वस्त नगरों के खोजी – सभी को इन धर्म-शास्त्रियों ने घृणा की दृष्टि से देखा है। उन्हें डर था कि ये किसी ऐसी बात का पता न लगा लें जिसका बाइबल से मेल न खाता हो।

इन 'देव-शास्त्रियों' ने दूसरे धर्मों का अध्ययन करने वालों की निंदा की है। उनका आग्रह रहा है कि ईसाईयत पनपी नहीं है, उसमें विकास नहीं हुआ है – वह तो 'इलहाम' है। उन्होंने किसी भी दूसरे प्राकृतिक धर्म से इसका संबंध स्वीकार करने से इन्कार किया है।

अब जो बातें पता लगी हैं इनसे असंदिग्ध रूप से यह सिद्ध हो जाता है कि सभी धर्म एक प्रकार से एक ही स्रोत से उत्पन्न हुए हैं। लेकिन, एक भी कट्टरपंथी ईसाई 'देव-शास्त्री' ऐसा नहीं होगा जो इस बात को

स्वीकार करे। उसे तो अपने पंथ, अपने इलहाम की रक्षा करनी है। वह 'ईमानदार' हो ही नहीं सकता। उसे 'ईमानदारी' के स्कूल में शिक्षा ही नहीं मिली। उसे 'ईमानदार' होना सिखाया ही नहीं गया। उसे विश्वास करने की शिक्षा मिली है और शिक्षा मिली है, विश्वास का पक्ष लेकर लड़ने की; तर्कों के ही विरुद्ध नहीं, यथार्थ बातों के विरुद्ध भी।

सारे संसार में एक भी 'देव-शास्त्री' ऐसा नहीं होगा जो इस बात का जरा-सा भी, रत्ती-भर भी प्रमाण पेश कर सके कि बाइबल 'ईश्वर' का 'इलहाम' है।

'देव-शास्त्री' लोग केवल कथन-मात्र पर निर्भर करते हैं। इनके पास कोई प्रमाण नहीं। उनका दावा है कि उनकी इलहामी किताब 'तर्क' से ऊपर है और उसे किसी प्रमाण की आवश्यकता नहीं।

कहाँ प्रमाण है कि रुथ की पुस्तक प्रेरित आदमी द्वारा लिखी गई है? कहाँ प्रमाण है कि सोलोमन के गीत का लेखक ईश्वर है? कहाँ प्रमाण है कि कहीं कोई आदमी प्रेरित किया गया है? कहाँ प्रमाण है कि ईसामसीह एक ईश्वर था और है? कहाँ प्रमाण है कि वे स्थान, जो स्वर्ग और नरक कहलाते हैं, अस्तित्व में हैं? कहाँ प्रमाण है कि चमत्कार सच में हुए?

कोई भी प्रमाण नहीं है।

देववाद प्रमाणों से पूरी तरह स्वतंत्र हैं।

कहाँ प्रमाण है कि देवदूत और भूत – शैतान और भगवान अस्तित्व में हैं? क्या ये किसी ने देखे या छुए हैं? क्या हमारी कोई एक ज्ञानेंद्री इनका अस्तित्व सत्यापित करती है?

धर्मशास्त्री लोग केवल कथं (assertions) पर निर्भर हैं। उनके पास कोई प्रमाण नहीं हैं। वे दावा करते हैं कि उनकी प्रेरित पुस्तकें तर्क से ऊपर हैं और प्रमाणों से स्वतंत्र हैं।

वे संभावना (probability), एकरूपता (analogy), निष्कर्ष (inference) की बात करते हैं – लेकिन कोई प्रमाण नहीं देते। वे कहते हैं कि सीजर की तरह क्राइस्ट भि जीवित रहा है। वे ख सकते हैं कि वे जानते हैं कि मूसा ने सिनाई प्रदेश में ईश्वर से बातें की हैं, जैसे वे जानते हैं कि ब्रिगहम यंग ने उटाह में ईश्वर से बातें की। दोनों मामलों में वही प्रमाण है – कोई नहीं।

वे कैसे कह सकते हैं कि ईसा मरकर फिर जी उठा, इसे वे एक पुस्तक में लिखा पाते हैं? किसने यह पुस्तक लिखी है? उन्हें पता नहीं। यह क्या प्रमाण है? जब तक हम यह सिद्ध न करे कि पुस्तक में लिखी हुई सभी बातें सत्य हैं तब तक यह कोई प्रमाण नहीं।

किसी एक 'चमत्कार' की स्थापना किसी दूसरे 'चमत्कार' के बगैर असंभव है और उसकी स्थापना के लिए फिर एक और 'चमत्कार' और उसके लिए फिर एक और 'चमत्कार' – इस प्रकार यह सिलसिला अनंत है। किसी भी 'चमत्कार' को सिद्ध करने के लिए मानव की गवाही पर्याप्त नहीं ! किसी भी 'चमत्कार' में विश्वास करने के लिए यह आवश्यक है कि हर आदमी स्वयं उसका साक्षी हो सके।

उनका कहना है को 2000 वर्ष पहले जो 'चमत्कार' दिखाए गए, उनसे ईसाईयत की सत्यता सिद्ध हो गई। इनमें से कोई भी एक 'चमत्कार' स्थापित नहीं हो सकता सिवाय मूर्खता-पूर्ण कथन से – सिवाय छोटी आयु में तरुणों के मस्तिष्क विकृत करके। सफलता प्राप्त करने के लिए 'देव-शास्त्री' बच्चों पर उनके झूलों में ही, उनके शिशु-गृहों में ही आक्रमण करता है। वे बच्चों के मस्तिष्क तथा उनकी कल्पना-शक्ति को गंदा करते हैं। जो हँसते-खेलते हैं उन्हें ये 'यातनाओं' से भयभीत करते हैं, और जो बदमाश हैं, उन्हें झूठी सांत्वना देते हैं।

यह स्थाई निष्ठुरता अपनी छाप चेहरे पर छोड़ती है – हमें देव-शास्त्रियों के उत्तर का अंदाज है – ठंडा, असहानुभूतिपूर्ण, करूर, बेरहम हँसी। मुस्कान का कोई चिह्न नहीं – कोई मुस्कुराहट नहीं –कोई मानवीयता की बात नहीं। यह चेहरा एक कुदरती खुशी के लिए धमकी है। यह प्रसन्न व्यक्ति को कहती है – कुत्ते से सावधान। – मौत के लिए तैयारी करो। यह चेहरा गोरगोन की कहानी की तरह – खुशी को पत्थर में बदल देता है। यह आनंद के विरुद्ध एक विरोध है – एक चेतावनी और एक धमकी।

आप देखते हैं कि प्रत्येक आत्मा एक मूर्तिकार है जो सृजन करती है और इस तरह अपने को उकेरती है।

प्रत्येक विचार एक छाप छोड़ता है।

देव-शस्त्र के विद्यार्थी को बचपन से सिखाया जाता है – माँ के हाथों में। ये झूठ उसके दिमाग में पहले ही बो दिए जाते हैं। उसे सिखाया जाता है कि वह बिना सवाल उठाए विश्वास करे। उसे यह बताया जाता है कि शक करना पाप है और जाँच-पड़ताल करना पाप है – कि विश्वास करना एक गुण है और अविश्वास एक अपराध है।

इस प्रकार उनके दिमाग गंदे किये जाते हैं, उन्हें पंगु बनाया जाता है। इस 'देव-शास्त्र' के अतिरिक्त अन्य सभी विषयों के बारे में स्वतंत्रता है, अन्य सभी दिशाओं में बालक को अध्ययन करने और विचार करने की प्रेरणा दी जाती है। (लेकिन) वह अपनी माता की गोद से ही सीधा 'रविवारी-पाठशाला' में जाता है। उस बेचारे के छोटे से मस्तिष्क को चमत्कारों और आश्चर्यजनक बातों से भर दिया जाता है। उसे बताया जाता है कि एक 'परमात्मा' है, जिसने यह संसार बनाया और जो लोगों को पुरस्कार और सजा देता है। उसे बताया जाता है कि उसी 'परमात्मा' ने 'बाइबल' बनाई और ईसा उसका बेटा था। कोई तर्क नहीं दिया जाता, कोई प्रमाण

नहीं दिया जाता। केवल कथन-मात्र ही काफी होता है। यदि वह प्रश्न पूछता है तो उसकी जिज्ञासा को और भी भारी भरकम बातों द्वारा दबा दिया जाता है। उसे कह दिया जाता है कि वह 'शैतान' से सावधान रहे। प्रत्येक 'रविवारी-पाठशाला' एक प्रकार का जेल है, जहाँ बच्चों के मस्तिष्कों को यंत्रणा दी जाती है और उन्हें बिगाड़ा जाता है – उन्हें जोर जबरदस्ती कैथोलिक या प्रोटेस्टेंट होने का ठप्पा लगाया जाता है। उनकी मौलिकता, उनके व्यक्तित्व, उनकी आत्मा की सत्य-प्रियता के विनाश के लिए सब संभव उपाय किये जाते हैं। देव-शास्त्रियों' के धर्म-स्कूलों तक पहुँचते-पहुँचते वह विनाश की पूर्णता को प्राप्त हो जाता है।

जब उपदेशक धर्म-स्कूल से बाहर निकलता है तो वह 'सत्य' की खोज नहीं करता। वह तो उसके पास है ही। उसके पास परमात्मा के यहाँ का 'इलहाम' है और उस 'इलहाम' से मेल खानेवाला एक मजहब है। उस 'इलहाम' का पक्ष लेकर लड़ना उसका कर्तव्य है। 'इलहाम' तथा उसके पंथ के विरुद्ध जो भी बातें होंगी वह उन्हें अस्वीकार करेगा। उसके लिए 'सच्चा' बनना असंभव है। उसके मत में 'अनंत-सुख' और 'अनंत-यातना' की बेहिसाब बातें भरी पड़ी हैं। वे सब झूठ में विश्वास करने और सत्य को अस्वीकार करने से ही प्राप्त होती हैं।

छानबीन करना एक असीम खतरा है, अविश्वास करना एक महान अपराध है और इसके दोषी को 'अनंत-यातना' मिलनी चाहिए तथा मिलेगी। इस महान सच्ची बात के आगे उसका साहस हार जाता है, उसका मनुष्यत्व जाता रहता है और वह चाहे विश्वास करे चाहे न करे, भय के मारे चिल्ला उठता है कि मैं विश्वास करता हूँ।

वे कहते हैं कि अंध-श्रद्धा अच्छी चीज है और विचार करना खतरनाक है। तो भी वह शिक्षक बनाता है – एक नेता, अपने मानव-बंधुओं को शिक्षा देने के लिए परमात्मा की ओर से भेज गया विशेष व्यक्ति।

ये कट्टरपंथी वास्तव में उन सब महान पुरुषों को बदनाम करते रहे हैं जो हमारी इस शताब्दी में हुए। उन्होंने महान भूगर्भ-वेत्ता लायल को बुरा बताया, क्योंकि उसने संसार को सच्ची बातें बताई थी। उन्होंने हमबोल्ट से घृणा की और उसको छोटा बनाया, जो कि जाति के सबसे बड़े चिंतकों में से एक था। उन्होंने डार्विन का मजाक बनाया और उसे नीचे घसीटा जो सबसे महान प्रकृति-वैज्ञानिक था, बड़ा सूक्ष्मदर्शी और संसार का सबसे अधिक आश्चर्यजनक सत्य-शोधक।

प्रत्येक कट्टरपंथी 'धर्मवेदी' से एक न एक बड़े से बड़े वैज्ञानिक का विरोध हुआ है, ऐसे लोगों का जिन्होंने संसार को बुद्धि के प्रकाश से भर दिया।

संप्रदायों ने प्रत्येक विज्ञान से, प्रत्येक विचारक से शत्रुता मोल ली है, और शताब्दियों तक अपनी शक्ति का प्रयोग केवल बुद्धिवादी 'प्रगति' को रोकने में ही किया है।

इन 'पूज्य' लोगों को स्वतंत्र होना चाहिए। उन्हें आनेवाले भविष्य के आगे आगे चलना चाहिए। लेकिन ये तो वे चमगादड़ हैं, वे उल्लू हैं जो खंडहरों में रहते हैं और प्रकाश से घबराते हैं। जो ईमानदार आदमी अपने विचारों को व्यक्त करता है, वे 'नास्तिक' कहकर उसकी नींद करते हैं। ऐसे आदमियों का मुँह बंद रखने के लिए वे जो कुछ भी कर सकते हैं करते हैं। वे अपनी 'बाइबल' को कानून के बल से सुरक्षित रखना चाहते हैं। वे लोगों के उपहास से बचने के लिए कानून बनानेवाली सभा की शरण में जाते हैं। वे चाहते हैं कि अदालतें उनके विरोधियों की दलील के उत्तर दें। यह सब कायरता, ढोंग और ईर्ष्या के उचित मिश्रण का परिणाम है।

किस कट्टरपंथी 'धर्म-वेदिका' से कब कौन काम की बात कही गई है? किस धार्मिक समिति ने मानवता के बुद्धि-धन में वृद्धि की है?

शताब्दियाँ बीतीं। ईसाई महंतों ने ईसाई संसार के लिए एक कानून-शास्त्र बनाया – मूर्खतापूर्ण, अदर्शनिक और अंतिम दर्जे का बेरहम।

चर्च का कहना है कि इसने लोगों को दयालु और न्यायी बनाया। क्या इसने नास्तिकों को यातना देकर ऐसा किया? उनकी आँखों को नष्ट करके किया? उन्हें जीवित जलाकर ऐसा किया? वह कौन-सा विज्ञान है जिसे ईसाई महंतों से सहायता मिली हो और जिसे उन्होंने आगे बढ़ाया हो? किस धार्मिक संप्रदाय ने अपने घर में किसी ऐसे 'सत्य' को आने दिया है, जिसके कहने वालों को दुख सहना करना पड़ा हो?

वे कहते हैं कि चर्च शिक्षा के मित्र रहे हैं और हैं। मैं इसे अस्वीकार करता हूँ। ईसाई पादरियों ने जो कॉलेज खोले वे लोगों को 'शिक्षा' देने के लिए नहीं, किन्तु उन्हें अपने मत में लाने के लिए; उन्हें अपने धर्म का संरक्षक बनाने के लिए। यह सब तो 'आत्म-रक्षा' मात्र के लिए किया गया है। कोई कट्टरपंथी धर्म न काभी वास्तविक शिक्षा का समर्थक रहा है और न रहेगा। कैथोलिक धर्म का मनाने वाला उतनी ही शिक्षा देना चाहता है जो किसी को कैथोलिक बना सके, प्रोटेस्टेंट धर्म का मनाने वाला उतनी ही शिक्षा देना चाहता है जो किसी को प्रोटेस्टेंट बना सके, किन्तु दोनों ही उस शिक्षा के विरोधी हैं जो आदमियों को 'मुक्त' करती है।

इसलिए, मिनिस्टर्स कहते हैं कि उन्होंने चैरिटी की शिक्षा दी। यह स्वाभाविक है। वे भिक्षा पर जीवित रहते हैं। सभी भिखारी शिक्षा देते हैं कि दूसरों को दान देना चाहिए।

इसलिए, वे यह भी कहते हैं कि ईसाई-पादरियों ने अस्पताल बनवाए। यह सत्य नहीं है। आदमियों ने जो अस्पताल बनाए, वे इसलिए नहीं बनवाए कि वे ईसाई थे, किन्तु इसलिए कि वे आदमी थे। उन्होंने अस्पताल दया करके नहीं बनाए किन्तु केवल आत्म-रक्षा के लिए बनवाए।

यदि कोई 'चेचक' का रोगी तुम्हारे दरवाजे पर आता है, तो न तो तुम उसे घर में अंदर घुसने दोगे और न जान से मार ही सकोगे। मजबूरी के कारण तुम्हें उसके लिए जगह की व्यवस्था करने ही होगी। और यह तुम केवल 'आत्म-रक्षा' के लिए करते हो। तुम्हारी 'ईसाइयत' को इससे कुछ लेना-देना नहीं है।

ये चर्च किसी को कुछ नहीं दे सकती, क्योंकि ये कुछ पैदा ही नहीं करती। कहा जाता है कि चर्च ने मनुष्यों को क्षमा-शील बना दिया है। मैं स्वीकार करता हूँ कि चर्च ने क्षमा के उपदेश दिए हैं – किन्तु उन्होंने कभी, एक भी शत्रु को क्षमा नहीं किया। जो महान और साहसी विचारक हुए हैं उनके विरुद्ध इन्होंने अनंत झूठों का प्रचार किया है। चर्च ने कभी किसी ईमानदार विरोधी के बारे में सत्य बात नहीं कही और न कहने का प्रयत्न किया।

चर्च सुपरनेचुरल की शिक्षा देता है। इसमें अदृश्य शक्ति पर विश्वास किया जाता है जो कारण के बिना प्रभाव पैदा करती है और प्रभाव के बिना कारण, जो विश्व को संचालित करता है और जिसे प्रार्थना करके मनाया जा सकता है, समारोह करके नरम बनाया जा सकता है, जो विश्वास करने का पुरस्कार देगा, मनुष्यों को उनके कार्यों के स्वाभाविक परिणाम से बचाएगा।

चर्च घटनाओं की अनंत और कठोर (inexorable) शृंखला से इन्कार करती है।

चर्च ने क्या अच्छे कार्य किये हैं?

यह शांति के उपदेश देने का दावा करता है, क्योंकि इसके संस्थापक ने कहा था, "मैं शांति नहीं बल्कि तलवार लेकर आया हूँ।" यह परिवार को संरक्षण करने का दावा करता है, क्योंकि इसका संस्थापक अपनी पत्नी और बच्चों को छोड़ने वाले को सैंकड़ों गुणा लंबा जीवन देने का प्रस्ताव देता है।

यह दावा करता है कि इसने मनुष्यों को बंधुत्व सिखाया और चर्च कहता है कि गोस्पल सारे संसार के लिए है क्योंकि ईसामसीह समारा की औरत को कहता है कि वह तो केवल इस्रायल के घर की खोई हुई भेड़ें ढूँढ़ने आया है। और यह कि बच्चों का खाना कुत्तों के आगे डालना ठीक नहीं है।

ईसामसीह के नाम पर, जो अनंत प्रतिशोध का डरावा देता है, इसने क्षमाशीलता का उपदेश दिया है।

ऑर्थोडॉक्स मिनिस्टर्स (पुजारी-वर्ग) का क्या उपयोग है?

वे आनंद के शत्रु हैं। वे नृत्य को घातक पाप करार देते हैं। वे waltz की बुराई से – पोलका के प्रदूषण से स्तब्ध हैं। वे थियेटर के शत्रु हैं। वे नायक-नायिकाओं पर भद्दी टिप्पणी करते हैं। वे उनसे घृणा करते हैं, क्योंकि वे उनके प्रतिद्वंद्वी हैं। वे सबथ की पवित्रता को बरकरार रखना चाहते हैं। जिस दिन वे प्रसन्न

व्यक्ति को देखते हैं तो वे द्वेष से भर जाते हैं। वे पिकनिक और भ्रमण दोनों के विरुद्ध उपदेश देते हैं। उनके विरुद्ध जो वनों और समुद्र देखते हैं, जो छाया और लहर देखते हैं। वे साइकिलों और ब्लूमर्स के विरुद्ध पवित्र क्रोध से भर जाते हैं। वे तलाक के विरुद्ध हैं। वे आग्रहपूर्वक कहते हैं कि ईश्वर की शान के लिए, ऐसे पति-पत्नियों को जो एक-दूसरे से घृणा करते हैं, मजबूरन इकट्ठे रहना चाहिए। वे सभी काल्पनिक साहित्य से घृणा करते हैं, बाइबल से प्रेम करते हैं। वे घोषणा करते हैं कि उच्च कोटि की पुस्तकें पढ़ने के लिए अयोग्य हैं। वे सोचते हैं कि लोगों को मृत्यु और नरक से संबंधित कविताओं और धर्म-उपदेशों से ही संतुष्ट रहना चाहिए। वे कला से घृणा करते हैं – ग्रीक कलाकृतियों, मूर्तियों से – सभी मानव आकृतियों से। वे चाहते हैं कि हाथों, चेहरे और कपड़े के चित्र या मूर्ति न बनाई जाएँ। अधिकतर पुजारी कपटी हैं वे उनकी सार्वजनिक रूप से निंदा करते हैं, जिनको वे गुप्त रूप से पसंद करते हैं, प्रशंसा करते हैं। वे नग्न-चित्रों के ऊपर हाथ रखकर उन्हें ढँकते हैं, किन्तु अपनी उंगलियों को दूर-दूर रखते हैं। वे नैतिक दबाव में विश्वास करने का ढोंग करते हैं और प्रत्येक चीज को कानून से संचालित कराना चाहते हैं। यदि उनके पास सत्ता हो तो वे हर उस चीज पर प्रतिबंध लगा दे, जिनसे स्त्री-पुरुषों को खुशी मिलती है। वे सबथ के दिन पुस्तकालय, संग्रहालय और कला-गैलरी बंद कर दें; वे रविवार के अखबार पर रोक लगा दें; पवित्र दिन कारों का यातायात और जन सुविधाएँ रुकवा दें; और सभी लोगों को उपदेश, प्रार्थना और भजन सुनने पर बाध्य कर दें।

ये प्यारे मिनिस्टर्स, जब गरीब लोगों की भीड़ में होते हैं तो ट्रस्टों, सिंडिकेटों और कॉर्पोरेट के खिलाफ गरजते हैं – धन, फैशन, विलास के विरुद्ध। वे dives और Lazarus के बारे में बताते हैं – धनी व्यक्ति को नरकवासी और भिखारियों को स्वर्ग का वसई बताते हैं। यदि उनके उपदेश ढाने लोगों के बीच में हो तो वे अपनी बंदूकों की दिशा बदल लेते हैं।

उनका शिक्षा पर कोई भरोसा नहीं है – बुद्धि के विकास पर कोई भरोसा नहीं है। वे भी और आशा की बात करते हैं। वे नहीं चाहते कि कोई सोच-विचार करे – कोई जाँच-पड़ताल करे। वे आग्रह करते हैं कि सभी को विश्वास रखना चाहिए। सहज-विश्वास (Credulity) ही सबसे बड़ा गुण है और शंका सबसे बड़ा पाप है।

ये मनुष्य विज्ञान के शत्रु हैं – बौद्धिक विकास के शत्रु हैं। वे महान चिंतकों का मजाक उड़ाते हैं। वे हर उस चीज को नकारते हैं जिनका 'पवित्र ग्रंथों' से विरोध है। वे अभी भी जोशुआ के ज्योतिष और मूसा के भूगर्भ-विज्ञान में विश्वास रखते हैं। वे भूतकाल के चमत्कारों में विश्वास रखते हैं और वर्तमान के प्रदर्शन को नकारते हैं। वे तथ्य के शत्रु हैं – ज्ञान के शत्रु हैं। इस धरती पर सुखी रहने की इच्छा, उन्हें बुरी और सांसारिक लगती है, किन्तु दूसरे लोक में सुखी रहने की इच्छा अध्यात्मिक और अच्छी लगती है।

प्रत्येक ऑर्थोडॉक्स चर्च झूठ और गलतियों की नींव पर खड़ी है। प्रत्येक अच्छा ऑर्थोडॉक्स मिनिस्टर हर उस बात का समर्थन करता है जिसके बारे में वह नहीं जानता और उस बात को नकारता है जिसे वह जानता है।

ऑर्थोडॉक्स मिनिस्टर्स मानवता के लिए क्या अच्छा कर रहे हैं?

कुछ भी नहीं।

वे क्या हानि पहुँचा रहे हैं।

वे हर जगह अंधविश्वास के बीज बो रहे हैं। वे दिमाग को अपंग कर रहे हैं, बच्चों की कल्पना को प्रदूषित कर रहे हैं। वे उनके दिलों में डर भर रहे हैं। उनकी शिक्षाओं से हजारों लोग मूर्ख बन रहे हैं। उनके साथ, ढोंग एक आदर-सम्मान की बात है और स्पष्टवादिता (Candor) खराब बात है। वे आदमियों की बुद्धि को गुलाम बना रहे हैं। उनकी शिक्षाओं से आदमी बर्बाद हो रहे हैं और अपनी ऊर्जा गलत दिशा में लगा रहे हैं। उन साध्यों को छोड़ देता है जिनको पूरा करके सुखी बन सकता था, अपनी जिंदगी असंभव के लिए समर्पित कर देते हैं, अज्ञात की पूजा करते हैं, उससे प्रार्थना करते हैं जो समझ से बाहर (Inconceivable) है और अज्ञानता से पैदा हुए और भय काँपते हुए हाथों द्वारा विकसित हुए एक राक्षसी मिथ के कंपकपाते हुए गुलाम बन जाते हैं।

अंधविश्वास एक ऐसा साँप है जो हर उद्यान में रेंगता और फुंफकारता है और अपने विषैले दाँत मनुष्यों के दिलों में गड़ा देता है।

यह मानव-जाति का सबसे बड़ा शत्रु है।

अंधविश्वास एक भिखमंगा है – एक लुटेरा, एक तानाशाह।

विज्ञान एक परोपकारी शक्ति है।

अंधविश्वास रक्त बहाता है। विज्ञान प्रकाश फैलाता है।

प्रिय उपदेशकों को सृष्टि-रचना का वर्णन करना छोड़ देना चाहिए। ईडेन गार्डन, मिट्टी का मनुष्य, पसली की औरत, चलने बोलने वाला साँप, सेब, मनुष्य का पतन, निष्कासन, स्वर्ग द्वार के तलवार लिए हुए देवदूत, रक्षक आदि बातें बंद कर देनी चाहिए। उन्हें बाढ़ और बाबेल टावर और भाषाओं के बिगड़ जाने वाली बातें छोड़ देनी चाहिए। उन्हें अब्राहम और जैकब को छोड़ देना चाहिए। इसलिए, जोसेफ की कहानी, हिब्रूओं की मिस्र में गुलामी, मूसा का कथा, जलती हुई झाड़ी, लाठी का साँप में बदल जाना, पानी का रक्त में बदल जाना, मेंढ़क की चामत्कारिक उत्पत्ति, पशुओं का मारना, धूल का जूँ में बदल जाना, ये सब छोड़ देना चाहिए।

मुरुस्थल में 40 दिन का ठहराव, मन्ना, Quails, पानी जो पहाड़ी तक चढ़ गया, जेहोवा का मूसा से आमने-सामने बैठकर बातें करना, 10 आज्ञाओं का देना, मूसा के शत्रुओं को निगलने के लिए धरती का खुलना, ये सब बंद करना चाहिए।

इन अच्छे उपदेशकों को यह स्वीकार करना चाहिए कि शंख बजाने से शहर की दीवारें नहीं गिर सकतीं, कि जेफ़ताह के लिए अपनी पुत्री का बलिदान करना रौंगटे खड़े करने वाला दृश्य था, कि दिन लंबे नहीं होते और चाँद जोशुआ की खातिर नहीं रुक सकता, कि मृतक सैमुएल एक चुड़ैल द्वारा नहीं पाला गया, कि मनुष्य स्वर्ग में आग के रथ पर नहीं गया, कि जोर्डन नदी एक डंडे के जोर से विभाजित नहीं हुई, कि भालू किसी बच्चे को पैगंबर पर हँसने के कारण नहीं मारते, कि एक भटकता हुआ ज्योतिषी निर्दोष लोगों को मारने के लिए स्वर्ग से बिजली इकट्ठी नहीं करता, कि वह वर्ष नहीं कराता और लोहे को नहीं तैराता, कि ravens के पास होटल नहीं है जहाँ उपदेशक फ्री में रहते हैं, कि राजा के लिए परछाई 10 डिग्री नहीं बदलती, कि एजकाइल को ईश्वर द्वारा रात्रिभोज तैयार करने को नहीं कहा गया, कि जोनाह मछली के पेट में केबिन बनाकर नहीं रहा, कि ओल्ड टेस्टामेंट के सारे चमत्कार रूपक (Allegories) और कविताएँ नहीं थे बल्कि पुराने शैली के झूठ थे। और प्यारे उपदेशकों को यह स्वीकार करने पर बाध्य होना पड़ेगा कि प्राकृतिक पिता के बिना कोई चमत्कार से बच्चा नहीं हो सकता, कि ईसा, यदि वह था, तो वह सिर्फ एक मनुष्य था, इसके सिवाय कुछ नहीं। कि उसने लोगों में से भूत बाहर नहीं निकाले – कि उसने अंधों के चिकनी मिट्टी से ठीक नहीं किया, कि उसने पानी को शराब में नहीं बदला, ना ही मछलियाँ और रोटियाँ चमत्कार से पैदा कीं – कि जीसस नहीं जानता था कि मुँह में सिक्का रखने वाली मछलियों को कहाँ पकड़ा जा सकता है – कि वह पानी पर नहीं चला – कि अपनी इच्छा से अदृश्य नहीं हुआ – कि वह बंद दरवाजे से पार नहीं हुआ – कि उसने मुर्दों को जिंदा नहीं किया – कि देवदूतों ने कब्र के पत्थर को नहीं हटाया – कि जीसस दुबारा जीवित नहीं हुआ और वह आकाश में नहीं गया।

ये सारी भूलें, भ्रम और विभ्रम – ये सब चमत्कार और मिथ बुद्धिमान लोगों के दिमागों से निकल जाने चाहियें।

मेरे प्रिय उपदेशको, मैं आपसे विनती करता हूँ कि सच बोलें। अपनी भेद को बताएँ कि मूसा बाइबल की पहली पाँच पुस्तकों (Pentateuch) का लेखक नहीं था। उन्हें बताइए कि कोई नहीं जानता ये पाँच पुस्तकें किसने लिखी हैं। उन्हें बताइए कि व्यवस्था-विवरण (Deuteronomy) क्राइस्ट से लगभग 600 वर्ष पहले लिखी गई। उन्हें बताइए कि कोई नहीं जानता कि जोशुआ, जजेज, रुथ, सैमुएल, किंग्स, क्रोनिकल्स, जोब, भजन (Psalms) और सोलोमन के गीत किसने लिखी। ईमानदार बनिए, सच बोलिए। उन्हें बताइए कि कोई नहीं जानता कि एस्तेर (Esther) किसने लिखी – कि एक्लेसीएस्त क्राइस्ट के काफी बाद में लिखी गई थी।

कि काफी भविष्यवाणियाँ घटनाओं के घटने के बाद लिखी गईं। उन्हें बताइए कि एजकेल और डेनियल मूर्ख थे। उन्हें बताइए कि कोई नहीं जानता कि गोस्पल किसने लिक्खे और उन्हें बताइए कि क्राइस्ट के समकालीनों द्वारा उसके बारे में एक भी पंक्ति नहीं लिखी गई। उन्हें बताइए कि यह केवल अनुमान है – और वह भी शायद ही। ईमानदार बनिए, सच बोलिए। अपने दिमाग को विकसित कीजिए। अपनी सारी इंद्रियों का प्रयोग कीजिए और तर्क की मशाल को ऊँचा पकड़िए।

कुछ ही वर्षों में ड्योढ़ियाँ (Pulpits) उपदेशकों की बजाय शिक्षकों से भर जाएँगी – विचारकों, वीर और ईमानदार लोगों से भर जाएँगी। भीड़ सभ्य बन जाएगी, बौद्धिक रूप से ईमानदार और सत्कारी बन जाएगी।

अब अधिकतर मिनिस्टर्स यह कहेंगे कि प्राचीन झूठों का सत्कार होना चाहिए – कि प्राचीन झूठ जो कि सफेद दाढ़ी वालों, झुर्रियों वालों, गंजे सिर वालों द्वारा लिखे गए, अब उन्हें रूपक और प्रेरक कविताएँ मान लिया जाना चाहिए। उनकी उपस्थिति में नास्तिकों को सिर झुकना चाहिए। प्राचीन बातों का सम्मान होना चाहिए। उन्हें यह याद रखना चाहिए कि ये झूठ, ये धोखे, चमत्कार और गलतियाँ हजारों वर्षों तक मानव-जाति को भ्रष्ट कर चुकी हैं, गुलाम बना चुकी हैं, उन पर शासन कर चुकी हैं।

इन मिनिस्टर्स को यह पता होना चाहिए कि ये संप्रदाय कल्पना पर आधारित हैं और कथन द्वारा प्रदर्शित किये गए हैं।

उन्हें पता होना चाहिए कि उनके पास कोई प्रमाण नहीं है – कुछ नहीं बस वायदे और धमकियाँ। उन्हें पता होना चाहिए कि पदार्थ (matter) के बिना और पहले बल (force) का विचार करना असंभव है, कि बल के बिना और पहले पदार्थ का विचार करना (conceive) भी उतना ही असंभव है – कि पदार्थ या बल की रचना या विनाश का विचार करना असंभव है – कि अनंत आकाश में अनंत बुद्धिमत्ता का विचार करना असंभव है और कि तत्व रूप में सृष्टिकर्ता या सृष्टि का विचार करना असंभव है।

ईसाइयों का ईश्वर एक कल्पना है, शायद एक अनुमान (inference)।

न कोई आदमी और न कोई आदमियों का समूह ही “कब और कहाँ से” का उत्तर दे सकता है। अस्तित्व का रहस्य की आदमी की बुद्धि के द्वारा व्याख्या नहीं की जा सकती है।

अपने जन्म से पहले हम नहीं जा सकते और अपनी मृत्यु के आगे भी हम कुछ नहीं देख सकते। सारे कर्तव्य, सारे आचार-शस्त्र, सारा ज्ञान, सर अनुभव, इस जीवन के लिए हैं, इस संसार के लिए है।

हम जानते हैं कि आदमी हैं, स्त्रियाँ हैं और बच्चे हैं। हम जानते हैं कि खुशी मुख्य रूप से आदमी के आचरण पर निर्भर करती है।

हम संतुष्ट हैं कि सारे देवता काल्पनिक हैं और परमात्मा है ही नहीं।

हम आशा और ज्ञान का फर्क जानते हैं, हम प्रसन्नता के लिए यहाँ आशा करते हैं और यहाँ के बाद के लिए आनंद के सपने लेते हैं, लेकिन हम जानते नहीं हैं। हम कुछ कर नहीं सकते, हम केवल आशा कर सकते हैं। हम अपने सपने ले सकते हैं। लंबी रात में हमारे सितारे चमक सकते हैं और प्रिय लोगों की कब्रों पर रोशनी डाल सकते हैं। हम अपने मृतक रिश्तेदारों की कब्रों पर झुक सकते हैं और देख सकते हैं कि इस जीवन से आगे कोई सिसकी, कोई आँसू, कोई दिल का टूटना नहीं है।

निष्कर्ष

आइए हम ईमानदार बनें। आइए हम अपनी आत्मा की सत्यप्रियता का संरक्षण करें। आइए शिक्षा को पालने से ही शुरू करें – प्यारी माँ की गोद में। यह पहली पाठशाला है। अध्यापक, माँ पूरी तरह से ईमानदार होने चाहियें। नर्सरी झूठों की आश्रयस्थली नहीं होनी चाहिए।

माता-पिता को सच्चा होना पड़ेगा – अपनी अज्ञानता मान लेने की ईमानदारी। कुछ भी सच के रूप में पढ़ाना नहीं चाहिए जो प्रदर्शित नहीं किया जा सकता।

प्रत्येक बालक को शंका करना, जाँच-पड़ताल और कारणों की माँग करना सिखाना चाहिए। प्रत्येक आत्मा अपनी रक्षा स्वयं करे – झूठ, धोखा और भूलों से सुरक्षा करे और सभी तरह के चालक लोगों से सावधान रहे – ड्योढ़ी वाले लोगों से भी।

बच्चों को अपनी शंका की अभिव्यक्ति करना आना चाहिए – तर्क की माँग करना आना चाहिए। शिक्षा का उद्देश्य बुद्धि का विकास, इंद्रियों का सक्रिय करना होना चाहिए। प्रत्येक पाठशाला एक मानसिक व्यायामशाला होनी चाहिए। बच्चों को जीवन की लड़ाई लड़ने के लिए लैस होना चाहिए। आज्ञापालन, साहस-विश्वास गुलामों के गुण होते हैं और स्वतंत्र व्यक्ति को गुलाम बना देते हैं। सबको यह सिखाना चाहिए कि कुछ भी इतना पवित्र नहीं है जिसकी जाँच न की जाए – इतना पवित्र नहीं है कि जिसे समझा न जाए।

प्रत्येक दिमाग को अधिकार है कि वह सारे परदे हटा दे, सब बाधाएँ दूर कर दे, सारी दीवारें गिरा दे, फुर्सत के पलों में छानबीन करे, ऊँचाइयाँ छूए, प्रत्येक गहराई तक पहुँचे, चर्च या पादरी या समुदाय या पुस्तक का सहारा लिए बिना जीवन को समझे।

विराट प्रकृति सबके लिए खुली होनी चाहिए। केवल बुद्धिमान और ईमानदार ही इस पुस्तक को पढ़ सकते हैं। इसका प्रत्येक पृष्ठ उलटिए। ढोंग पुस्तकें पढ़ता है और उन्हें गलत उद्धृत करता है। विश्वास कथनों को स्वीकार करता है। अंधविश्वास एक पंक्ति भी नहीं पढ़ सकता या छोटे से छोटा शब्द नहीं लिख सकता। फिर

भी इसने सारे ज्ञान, सारे सत्यों पर कब्जा कर रक्खा है और विचार का एकमात्र स्रोत बना हुआ है। मानसिक आजादी का मतलब है इस पुस्तक (प्रकृति) को पढ़ने का सबको अधिकार है।

चर्च और पुजारियों के पास कोई सत्ता नहीं है – संख्या-बल और बहुमत की कोई सत्ता नहीं है। प्रकृति ही एकमात्र सत्ता है, तथ्य जिन्हें हम जानते हैं। तथ्य मास्टर हैं, अज्ञानियों के दुश्मन हैं, बुद्धिमानों के सेवक और मित्र हैं। अज्ञानता रहस्य और दुखों की माँ है। अंधविश्वास और कष्टों की, बर्बादी और अभावों की माँ है।

बुद्धिमत्ता ही एकमात्र प्रकाश है। यह हमें मार्ग पर बनाए रखती है, बाधाओं से बचाती है और प्रकृति की शक्तियों की बढ़त लेने की क्षमता प्रदान करती है। यह मानवता को ऊपर उठाने का एकमात्र लीवर है। बुद्धि का विकास करना संसार को सभी बनाना है। बुद्धिमत्ता हमें स्वर्ग के काल्पनिक पंखों-सींगों वाले डरावने दैत्यों से छुटकारा दिलाती है, भूतों और पिशाचों से मुक्ति प्रदान करती है और अंधेरे के साम्राज्य में प्रकाश बिखेरती है।

सबको सिखाना चाहिए कि प्रकृति से आगे का कोई प्रमाण नहीं है, कि जो आदमी पत्थर या लकड़ी की मूर्ति की पूजा करता है वह उतना ही मूर्ख है, जितना काल्पनिक ईश्वर को प्रार्थना करना, कि सभी पूजा-पद्धतियाँ एक धरातल, एक नींव और एक भूल पर टिकी हैं → अज्ञान के ऊपर, डर के ऊपर, कि व्यक्तिगत ईश्वर पर विश्वास करना उतना ही मूर्खतापूर्ण है जितना व्यक्तिगत शैतान पर।

इसलिए सबको सिखाया जाना चाहिए कि शक्तियाँ प्रकृति के तथ्य किसी प्रार्थना या प्रशंसा या समारोह या बलिदान से बदले या नियंत्रित नहीं किये जा सकते हैं, कि कोई चमत्कार नहीं होता है, कि शक्ति केवल शक्तियों द्वारा ही दबाई जा सकती है, कि सारा संसार प्राकृतिक है।

सबको सिखाया जाना चाहिए कि मनुष्य स्वयं की रक्षा करे, कि प्रकृति से श्रेष्ठतर कोई शक्ति नहीं है जो मनुष्य की देखभाल करे, कि प्रकृति न तो दया करती है न घृणा – कि उसकी शक्तियाँ मनुष्यों की तरफ कोई ध्यान दिए बिना अपना कार्य करती हैं, कि वह बिना किसी इच्छा के उत्पादन करती और बिना पछतावे के नष्ट कर देती है।

सबको सिखाया जाना चाहिए कि उपयोगिता ही असली रिलीजन की कली, फूल और फल है। पोप, कार्डिनल्स, बिशप, पुआजरी-वर्ग सभी अनुपयोगी हैं। वे कुछ उत्पादन नहीं करते हैं। वे दूसरों के परिश्रम पर पलटे हैं। वे ऐसे परजीवी हैं जो दूसरों को डराकर उनका दोहन करते हैं। वे उस चमगादड़ के समान है जो ईमानदार परिश्रमी जीवों का खून चूसते हैं। प्रत्येक चर्च एक संगठित भिखारी है। वहाँ सब भिक्षा पर जीते हैं – भिक्षा जो भय और बल से वसूली जाती है। प्रत्येक ऑर्थोडॉक्स चर्च स्वर्ग का वादा और नरक का भय दिखाती

है। और ये वादे और डरावे भिक्षा या टैक्स वसूलने के लिए किये जाते हैं। प्रत्येक चर्च चिल्लाती है – विश्वास करो और दान दो।

संसार में एक नया युग आ रहा है। हम उपयोगिता के रिलीजन पर विश्वास करना आरंभ कर रहे हैं।

हमारे ईसा, हमारे अवतार, हमारे पैगंबर वे आदमी हैं जिन्होंने जंगलों को कट, पृथ्वी को जोता, नदियों पर लोहे के पल बिछाए, रेलें और नहरें बनाईं, बड़े-बड़े जहाजों तथा भाप-यानों (Locomotive engine) का आविष्कार किया; वे सब आदमी हैं जिन्होंने तार और बेतार के तार बनाए तथा अपनी खोज और श्रम से बिजली को प्रकाशित कर दिया। वे सब आदमी हैं जिन्होंने करघों और ताकुओं का आविष्कार कर संसार को कपड़े पहनाए, वे सब आदमी हैं, जिन्होंने छपाई और बड़े-बड़े छापेखानों का आविष्कार किया, जिससे सारा संसार काव्य, उपन्यास तथा वैज्ञानिक ग्रंथों से भर गया, जिससे उन बच्चों तक के लिए ज्ञान सुरक्षित रहता है, जो अभी पैदा भी नहीं हुए, वे सब आदमी हैं जिन्होंने उन सब मशीनों का आविष्कार किया, जिनसे हमारे काम की लकड़ी तथा लोहे की चीजें बनती हैं, वे आदमी हैं जिन्होंने आकाश को एक सिरे से दूसरे सिरे तक छान डाला और तारा-गणों के रास्तों का पता लगाया, जिन्होंने ऊँचे पर्वतों और गहरे समुद्रों में संसार की कथा पढ़ी, वे आदमी हैं जिन्होंने दर्द पर जीत हासिल की और मनुष्य की आयु को बढ़ाया, वे महान कवि जिनके काव्यों ने हमें मस्त बनाया, वे महान चित्रकार और मूर्तिकार जिन्होंने चित्र-पट को वाणी दी तथा पत्थर में प्राण भर दिए; वे महान व्याख्याता जो संसार को अपने साथ बाह्य ले गए; वे गीतकार जिन्होंने अपना जीवन शब्दों की ध्वनि को समर्पित कर दिया; वे उद्योगपति, वे बड़े-बड़े माल पैदा करने वाले तथा वे सैनिक जिन्होंने न्याय का पक्ष लेकर युद्ध किया। उपयोगी कामों को करने वाले ये महान व्यक्तियों के समूह – ये हमारे ईसा, हमारे अवतार, हमारे पैगंबर वे आदमी हैं। विज्ञान की जीत ही हमारा चमत्कार है। वे किताबें जिनमें प्रकृति के संबंध में यथार्थ बातें लिखी हैं, वे हमारे धार्मिक ग्रंथ हैं और वह शक्ति ही परमात्मा है जो प्रत्येक अणु में है, जो प्रत्येक सितारे में है, जो उस प्रत्येक चीज में है जो जीवित है, बढ़ती है और विचार करती है, जो आशा करती और कष्ट पाती है।

सम्पूर्ण (absolute) को हम जान नहीं सकते, प्रकृति की सीमा के पड़े हम जा नहीं सकते। सभी कर्तव्यों का पालन यहीं इसी संसार में होना चाहिए। हम मैत्री करें और मेहनत करें। हम धैर्य रक्खें और काम करें। हम साहसी बनें और प्रसन्न रहें। हम स्वतंत्र जीवन व्यतीत करें। हम आशा करें कि भविष्य में सारी मानव-संतान सुखी हो सकेगी और सबसे ऊपर हम अपने भीतर के सत्य की रक्षा करें।

रॉबर्ट ग्रीन इंगरसॉल का पूरा साहित्य पढ़ने के लिए कृपया इस वेबसाइट पर विजिट करें:-

www.theingersolltimes.com